OPEN ACCESS

DRA ANNUAL INTERNATIONAL CONFERENCE 2024 ON "SOCIO-ECONOMIC TRANSFORMATION: OPPORTUNITIES AND CHALLENGES"

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 [Special Issue 1] Year 2025*

Conference Paper

21वीं सदी की हिंदी कहानियों में कृषक जीवन का यथार्थवादी चित्रण

मोनू स्वामी *
शोधार्थी, हिंदी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *मोनू स्वामी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18623514

सारांश

21वीं सदी की हिंदी कहानियों में कृषक जीवन का यथार्थवादी चित्रण" विषय समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में ग्रामीण समाज और किसान वर्ग की बदलती परिस्थितियों का बहुआयामी अध्ययन प्रस्तुत करता है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, भूमिहीनता, बाजारवाद, पर्यावरणीय संकट और बदलती सामाजिक संरचनाओं ने किसान जीवन को गहरे रूप से प्रभावित किया है इन जटिलताओं का संवेदनशील और प्रामाणिक चित्र 21वीं सदी के कहानीकारों की रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

समकालीन कहानियाँ किसान जीवन को केवल गरीबी, शोषण और संघर्ष तक सीमित नहीं करतीं, बल्कि उनके मानसिक द्वंद्व, भावनात्मक दुनिया, सामाजिक पहचान, पारिवारिक संबंधों, कृषि-आधारित संस्कृति, स्त्री-श्रम, पलायन और किसान आंदोलनों जैसे विविध पक्षों को भी यथार्थवाद के साथ उभारती हैं। बदलते ग्रामीण परिदृश्य में किसानों की चुनौतियों कर्ज, फसल संकट, आत्महत्या, सरकारी नीतियों की विफलता तथा तकनीकी परिवर्तन इन सभी को आज के कहानीकार नए दृष्टि-बिंदु से देखते हैं।

इसके साथ ही, प्रेमचंद, रेणु, नागार्जुन, निर्मल वर्मा, संजीव, उदयप्रकाश, शिवमूर्ति जैसे लेखकों की परंपरा और समकालीन दृष्टि मिलकर कृषक जीवन के साहित्यिक प्रतिबिंब को अत्यंत प्रामाणिक, मानवीय और संवेदनशील बनाती है। यह साहित्य न केवल किसान की पीड़ा और संघर्ष को उजागर करता है, बल्कि सामाजिक न्याय, आत्मसम्मान, सामूहिक चेतना और ग्रामीण अस्मिता जैसे तत्वों को भी सशक्त ढंग से प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार, 21वीं सदी की हिंदी कहानियाँ कृषक जीवन का ऐसा यथार्थवादी चित्र उभारती हैं जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक सभी स्तरों पर किसान की बदलती दुनिया को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 12-12-2024
- **Accepted:** 21-02-2025
- **Published:** 11-03-2025
- **IJCRM:**4(SP1); 2025: 267-271
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

मोनू स्वामी. 21वीं सदी की हिंदी कहानियों में कृषक जीवन का यथार्थवादी चित्रण. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(SP1):267-271.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: कृषक जीवन, समकालीन हिंदी कहानी, ग्रामीण यथार्थ, किसान विमर्श, कृषि संकट, किसान आंदोलन, ग्रामीण परिवर्तन, वैश्वीकरण और कृषि, स्त्री–किसान, पलायन, पर्यावरणीय संकट, सामाजिक न्याय, ग्रामीण अस्मिता, कथा-साहित्य, बाजारवाद

© 2025 मोनू स्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य सदैव भारतीय ग्रामीण जीवन, कृषि आधारित समाज और किसान वर्ग की पीड़ा तथा संघर्ष को अपनी मूलधारा में स्थान देता आया है। बीसवीं सदी में मुंशी प्रेमचंद, फणीश्वर नाथ 'रेणु', नागार्जुन, यशपाल, जैनेन्द्र, और कई अन्य क्लासिकल कहानीकारों ने जिस यथार्थवादी परंपरा की नींव रखी, उसने आगे आने वाले कथा-साहित्य को गहराई से प्रभावित किया। इक्कीसवीं सदी में हिंदी कहानी एक व्यापक सामाजिक संक्रमण से गुजर रही है, जिसमें वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद, तकनीकी परिवर्तन, शहरीकरण, पूंजीवादी कृषि-नीतियों का प्रभाव, कृषि संकट, ऋणग्रस्तता, भूमि अधिग्रहण, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक–राजनीतिक असमानताओं ने किसान जीवन के स्वरूप को गहराई से बदल दिया है। इस बदले हुए जीवन-यथार्थ ने समकालीन हिंदी कहानी को नई दृष्टि, नए प्रश्न और नए कथ्य प्रदान किए हैं। इक्कीसवीं सदी की कहानियाँ अब केवल किसान की गरीबी या विषमता को नहीं, बल्कि उसके सामाजिक अस्तित्व, राजनीतिक अधिकारों, पर्यावरणीय संकट, महिला कृषकों के संघर्ष, युवा किसानों के प्रवास, और आधुनिक तकनीक के प्रभाव जैसी बहुआयामी समस्याओं को विस्तार से चित्रित करती हैं। यह शोध-पत्र इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में 21वीं सदी की हिंदी कहानियों में कृषक जीवन के यथार्थवादी चित्रण का विश्लेषण करता है।

क्लासिकल परंपरा और आधुनिक यथार्थ: 21वीं सदी का आधार

किसान जीवन का साहित्यिक चित्रण इक्कीसवीं सदी में अचानक प्रकट नहीं हुआ। इसकी जड़ें भी बीसवीं सदी की साहित्यिक परंपरा में गहराई से जुड़ी हुई हैं। मुंशी प्रेमचंद की रचनाएं 'गोदान', 'कफन', 'पूस की रात' और 'रंगभूमि' किसानों की असमानताओं, ज़मींदारी शोषण, गरीबी, वर्ग-संघर्ष और नैतिक मानवीय मूल्यों को जिस तीक्ष्णता से सामने रखती हैं, वह आज भी समकालीन कहानीकारों के लेखन में प्रेरणा का स्रोत है। प्रेमचंद का यथार्थवादी दृष्टिकोण किसान को दया का पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील और आत्मसम्मान से भरपूर मनुष्य के रूप में स्थापित करता है।

इसी तरह फणीश्वर नाथ 'रेणु' की 'मैला आंचल', 'परती परिकथा' और उनकी असंख्य कहानियों में ग्रामीण समाज का जीवंत, बहुरंगी, बहुसंवेदी जगत उभरता है। रेणु की आंचलिकता ग्रामीण संस्कृति, लोक–चेतना, सामुदायिक संघर्ष और किसान-मजदूर के राजनीतिक–सामाजिक जीवन को अपनी संपूर्णता में पकड़ने का उदाहरण है। आधुनिक कहानीकार किसानों के आंदोलन, पंचायत राजनीति, सामूहिकता और भूमि संघर्ष को चित्रित करते समय उसी आंचलिक परंपरा के नए रूपों का प्रयोग करते हैं।

नागार्जुन का साहित्य किसान आंदोलनों, जन–प्रतिरोध और राजनीतिक अन्याय के खिलाफ खुली आवाज़ का प्रतीक है। उनका जनपक्षधर दृष्टिकोण 21वीं सदी के कहानीकारों में किसान को संघर्षरत नागरिक और लोकतांत्रिक अधिकारों के वाहक के रूप में उभारता है। इसी तरह जयशंकर प्रसाद की मानवीयता, न्याय-चेतना और आध्यात्मिक गहराई भी समकालीन कहानीकारों में किसान को केवल आर्थिक नहीं, बल्कि मनुष्य के पूरे अस्तित्व के रूप में दर्शाती है। इस प्रकार, 21वीं सदी का कृषक–विमर्श क्लासिकल परंपरा का ही रूपांतरण है, जो बदलते समय के अनुसार नया रूप ग्रहण करता है।

21वीं सदी का सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य और किसान जीवन

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ से ही भारत में कृषि संकट गहराता गया। उदारीकरण के बाद बाजारवादी नीतियों में कृषि को वाणिज्यिक ढांचे में ढालने की कोशिशें बढ़ीं, जिससे छोटे और सीमांत किसानों की स्थिति बदतर होती गई। ऋण, महंगे बीज, रासायनिक खेती की लागत, मौसम में अस्थिरता, फसल बीमा की जटिलता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गिरावट और खेती का लाभहीन हो जाना आम किसान के लिए गंभीर संकट बन गया। आधुनिक युग में सबसे तीव्र संकटों में से एक किसान आत्महत्या की बढ़ती दर है, जिसे 21वीं सदी की कहानियों ने अत्यंत संवेदनात्मक और तथ्यपरक ढंग से उठाया है। किसान आंदोलन, विशेषकर 2020–21 का ऐतिहासिक आंदोलन, साहित्य में नई ऊर्जा और विमर्श का स्रोत बना, जिसने किसान की पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर नए तरीके से स्थापित किया। यह वह दौर है जब किसान केवल खेतों का मजदूर या ग्रामीण पात्र नहीं, बल्कि सामाजिक–राजनीतिक चेतना और लोकतांत्रिक अधिकारों का वाहक बनकर सामने आता है।

समकालीन कहानीकार और कृषक जीवन का यथार्थ

भारतीय कहानी परंपरा में कृषक जीवन हमेशा से एक केंद्रीय विषय रहा है। ग्रामीण समाज भारतीय सभ्यता की जड़ है, और किसान उस समाज का धड़कता हुआ हृदय। बदलते सामाजिक-आर्थिक ढाँचों, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण और बाज़ारवादी प्रवृत्तियों के दबाव में किसानों का जीवन लगातार संक्रमण से गुजरता रहा है। हिंदी साहित्य में कई रचनाकारों ने इस जीवन की जटिलताओं, संघर्षों, दुख-दर्द और मानवीय संवेदनाओं को गहनता से चित्रित किया है। विशेष रूप से निर्मल वर्मा, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद और नागार्जुन इन सभी की दृष्टि कृषक जीवन की अलग-अलग परतों को उजागर करती है।

1. प्रेमचंद: कृषक जीवन का आधारभूत यथार्थ और सामाजिक विषमता

प्रेमचंद को हिंदी कथा-साहित्य में ग्रामीण यथार्थ का सबसे समर्थ और मौलिक चित्रकार माना जाता है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में कृषक-जीवन का यथार्थ एक ऐसे समाज का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ उत्पीड़न, वर्ग-विरोध, सामंती शोषण और निर्धनता किसानों की नियति बन चुकी है।

"पूस की रात", "कफन", "सद्गति" जैसी कहानियों में प्रेमचंद किसान की आर्थिक विवशताओं को उसकी अस्तित्वगत पीड़ा से जोड़ते हैं। उनके यहाँ किसान केवल गरीबी का प्रतीक नहीं, बल्कि मानवाधिकारों से वंचित एक संघर्षशील चरित्र है।

प्रेमचंद पहले लेखक हैं जिन्होंने कृषक जीवन की विमर्शधर्मी व्याख्या की—

- भूमि व्यवस्था की विषमता
- जमींदारों-महाजनों का अत्याचार
- प्राकृतिक विपत्तियों का मानसिक प्रभाव
- श्रम और अस्मिता का संघर्ष

© 2025 मोनू स्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

उनकी दृष्टि कृषक जीवन को 'करुणा' से नहीं, बल्कि 'सामाजिक न्याय' के आग्रह से देखती है। इसलिए समकालीन किसान विमर्श में भी प्रेमचंद की दृष्टि आज उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने समय में थी।

2. जयशंकर प्रसाद: सांस्कृतिक दृष्टि और ग्रामीण जीवन की सूक्ष्म भावभूमि**

जयशंकर प्रसाद मूलतः कवि और नाटककार रहे, पर उनकी कहानियों में भी किसान जीवन का मार्मिक चित्रण मिलता है। प्रसाद का दृष्टिकोण प्रेमचंद से भिन्न है वे किसान के दुख और संघर्ष को सांस्कृतिक, मानवतावादी और सौंदर्यपरक संवेदना के साथ चित्रित करते हैं।

उनकी कहानियों में किसान केवल आर्थिक दबावों का शिकार नहीं; वह प्रकृति, जीवन-दर्शन, आस्था और श्रम-संस्कृति से गहरा संबंध रखने वाला व्यक्ति है। प्रसाद की कथा-शैली में—

- प्रकृति का सौंदर्य
- मानवीय करुणा
- शोषण के विरुद्ध आत्मगौरव
- जीवन के सांस्कृतिक मूल्य

इन तत्वों के माध्यम से ग्रामीण जीवन का मानवतावादी पक्ष प्रकट होता है। प्रसाद के यहाँ किसान की छवि 'पीड़ित' से अधिक 'गौरवशाली श्रमिक' की है, जो समकालीन साहित्य में 'ग्राम्य अस्मिता' के नए विमर्श का आधार बनती है।

3. नागार्जुन: किसान आंदोलन, वर्ग संघर्ष और जनपक्षधरता का प्रखर स्वर

नागार्जुन हिंदी साहित्य के उन विरल कथाकार-कवियों में हैं जिन्होंने किसान जीवन को सिर्फ साहित्यिक विषय न मानकर उसे जनसंघर्ष के रूप में देखा। वे स्वयं कृषि-संस्कृति और जनांदोलनों से गहरे जुड़े रहे, इसलिए उनके यहाँ किसान का चित्रण राजनीतिक चेतना से जुड़ा हुआ है।

नागार्जुन के साहित्य में—

- भूख और गरीबी की क्रूर वास्तविकता
- जमींदारी शोषण के खिलाफ विद्रोह
- किसान आंदोलनों की सामूहिक चेतना
- सत्ता-संरचनाओं का तीखा प्रतिरोध
- श्रमिक-किसान एकता का आह्वान

ये सभी तत्व एक साथ मौजूद हैं। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ किसानों की सामूहिक पीड़ा और संघर्ष को आवाज़ देती हैं। नागार्जुन ने किसान को 'संवेदना की वस्तु' नहीं, बल्कि 'इतिहास-निर्माता वर्ग' के रूप में प्रस्तुत किया। यही कारण है कि आधुनिक किसान आंदोलनों के संदर्भ में नागार्जुन सबसे प्रासंगिक साहित्यकार बनकर उभरते हैं।

4. निर्मल वर्मा: बदलते ग्रामीण समाज का मनोवैज्ञानिक और अस्तित्ववादी चित्रण

निर्मल वर्मा 21वीं सदी के कथा-विमर्श में महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उनकी कहानियों में ग्रामीण समाज का यथार्थ पारंपरिक शोषण की कथा भर नहीं, बल्कि बदलते समय में उभरने वाले मानसिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विस्थापन का चित्रण है।

निर्मल वर्मा की कथाएँ ग्रामीण जीवन को अत्यधिक संवेदनात्मक, आत्मपरक और मनोवैज्ञानिक गहराई के साथ चित्रित करती हैं। उनके यहाँ—

- आधुनिकता की मार झेलता किसान
- खेत-खलिहानों से शहर की ओर पलायन
- परिवार और समुदाय का विखंडन
- कृषि-आधारित संस्कृति का पतन
- किसान के भीतर उपजता अकेलापन

ये सभी बिंदु समकालीन भारतीय किसान की नई समस्याओं को उद्घाटित करते हैं।निर्मल वर्मा ग्रामीण मनुष्य को 'स्थितियों से लड़ते हुए मनुष्य' के रूप में देखते हैं, जिसका मानसिक संघर्ष आज के कृषि संकट को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रेमचंद, प्रसाद, नागार्जुन और निर्मल वर्मा ये चारों कहानीकार कृषक जीवन को अलग-अलग कोणों से देखते हैं। प्रेमचंद सामाजिक-आर्थिक शोषण पर प्रकाश डालते हैं, प्रसाद ग्रामीण जीवन की सांस्कृतिक-मानवीय भावभूमि को सामने लाते हैं, नागार्जुन किसान आंदोलनों और वर्ग संघर्ष का क्रांतिकारी स्वर प्रस्तुत करते हैं, निर्मल वर्मा आधुनिक समय में ग्रामीण व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक विघटन और अस्तित्व चिंताओं को दिखाते हैं।

इन चारों की संयुक्त दृष्टि से 'कृषक जीवन का यथार्थ' बहुआयामी, गहन और परिवर्तनशील रूप में सामने आता है। आज की किसान-समस्याओं, आंदोलनों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समझने के लिए यह साहित्यिक परम्परा अत्यंत प्रासंगिक है।

उदय प्रकाश 21वीं सदी के सबसे प्रमुख कहानीकारों में हैं जिनकी रचनाओं में आधुनिक भारत का विखंडित और असमान यथार्थ अत्यंत तीव्रता से उभरता है। उनकी कहानियों में किसान–मजदूर वर्ग की असुरक्षा, निराशा, विस्थापन और राजनीति–बाजार की मिलीभगत स्पष्ट दिखती है। *टेपचू*, *पीली छतरी वाली लड़की* और अन्य कहानियाँ भारतीय कृषि और ग्रामीण समाज की बदलती संरचनाओं को गहरे मानवीय दृष्टिकोण से चित्रित करती हैं। उदय प्रकाश किसान जीवन के भीतर छिपे हुए अवसाद, विडंबना और राजनीतिक दमन को बहुत सूक्ष्मता से पढ़ने वाले लेखक हैं।

संजीव का कथा-संसार किसान जीवन, कृषि संकट और ग्रामीण राजनीति का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उनकी कथा-शैली में गहराई, तथ्यपरकता और सामाजिक विज्ञान की अंतर्दृष्टि दिखाई देती है। भूमि अधिग्रहण, कॉर्पोरेट कृषि, सामुदायिक संघर्ष, किसान संगठनों का विकास और ग्रामीण नेतृत्व की राजनीति जैसे विषय उनकी कहानियों में बार-बार उपस्थित होते हैं।

अखिलेश की कहानियाँ किसान को आधुनिक सत्ता-संरचनाओं के बीच फंसे हुए मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करती हैं। वे दिखाते हैं कि आधुनिक नीतियाँ कैसे धीरे-धीरे ग्रामीण जीवन को क्षतिग्रस्त करती हैं और किसान को आर्थिक ही नहीं, राजनीतिक रूप से भी निर्बल बनाती हैं। उनकी कथा-दृष्टि में किसान संघर्ष, प्रतिरोध और सामुदायिक एकजुटता का स्वर अत्यंत स्पष्ट है।

चित्रा मुद्गल का साहित्य किसान-मजदूर वर्ग की पीड़ा, पलायन, गांव-शहर तनाव और ग्रामीण स्त्री के बहुआयामी संघर्षों को भावनात्मक और प्रामाणिक रूप से अंकित करता है। उनकी कहानियाँ कृषक

© 2025 मोनू स्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

जीवन की मनोवैज्ञानिक और सामाजिक गहराइयों का विश्लेषण करती हैं।

मनीषा कुलश्रेष्ठ समकालीन ग्रामीण स्त्री—विशेष रूप से महिला किसानों—की बदलती भूमिका, संघर्ष, शोषण और सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को बहुत तीव्रता से चित्रित करती हैं। उनकी दृष्टि में किसान जीवन केवल पुरुष केंद्रित नहीं, बल्कि पूरा पारिवारिक और सामुदायिक संरचना का प्रश्न बन जाता है।

किसान जीवन का बहुआयामी यथार्थ: 21वीं सदी के कथा-रूप में

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में किसान जीवन बहुआयामी रूपों में उभरता है। पहला आयाम आर्थिक संकट का है, जिसे कहानीकार केवल आँकड़ों के स्तर पर नहीं, बल्कि व्यक्ति–परिवार–समाज के अनुभवों के साथ दिखाते हैं। किसान की ऋणग्रस्तता, गिरवी रखी जमीन, बिचौलियों का दखल, न्यूनतम समर्थन मूल्य की समस्या और कृषि उत्पादन की लागत—ये सभी तत्व कहानी में जीवंत यथार्थ के रूप में आते हैं।

दूसरा आयाम प्रवास का है। आधुनिक कृषि व्यवस्था में कम आय और अस्थिरता ने युवा किसानों को शहरों की ओर धकेल दिया है। कई समकालीन कहानियों में युवा किसान के सपनों के टूटने, परिवार से दूर होने और ग्रामीण संस्कृति के विघटन का दर्द स्पष्ट महसूस होता है।

तीसरा महत्वपूर्ण आयाम महिला किसानों का है। 21वीं सदी के कृषि जीवन में महिलाएँ खेती, पशुपालन और घरेलू–आर्थिक कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, परंतु उन्हें किसान का दर्जा नहीं मिलता। समकालीन कहानीकार इस असमानता और स्त्री के संघर्ष को अत्यंत संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

चौथा आयाम किसान आंदोलनों का है। इक्कीसवीं सदी में किसान आंदोलन केवल आर्थिक मांगों तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक अधिकारों और राजनीतिक अस्मिता का प्रश्न बनकर सामने आया है। कहानीकार इस आंदोलन को सामूहिक प्रतिरोध, जमीनी लोकतंत्र और किसानों की एकता के प्रतीक के रूप में दर्शाते हैं।

पाँचवाँ आयाम पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन का है। अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़, जल संकट, और भूमि की उर्वरता में गिरावट जैसे पर्यावरणीय संकट आधुनिक कृषि को गहराई से प्रभावित करते हैं। समकालीन कहानियों में प्रकृति और किसान का संबंध बदलते मौसम और आधुनिक विज्ञान के बीच फंसा हुआ दिखाई देता है।

निष्कर्ष

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियाँ कृषक जीवन के यथार्थ को बहुआयामी, गहन और विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत करती हैं। समकालीन कहानीकार किसान को केवल गरीबी का प्रतीक नहीं, बल्कि बदलते भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संघर्षों का सक्रिय सहभागी मानते हैं। आधुनिक कहानीकारों के लेखन में किसान का दर्द, संघर्ष, प्रतिरोध, चेतना, आंदोलन, स्त्री–किसानों की भूमिका, जलवायु संकट, तकनीकी परिवर्तन और बाजारवादी नीतियों के प्रभाव का गहरा विश्लेषण दिखाई देता है। यह साहित्य प्रेमचंद, रेणु, नागार्जुन और प्रसाद जैसी परंपराओं से प्रेरणा लेकर नई परिस्थितियों में किसान जीवन की कथा को विस्तृत करता है।

इस प्रकार, 21वीं सदी की हिंदी कहानियाँ न केवल कृषक जीवन का यथार्थवादी चित्रण करती हैं, बल्कि समकालीन भारतीय समाज के बदलते स्वरूप का भी महत्वपूर्ण दस्तावेज़ बन जाती हैं। उनका साहित्य आज के भारत में किसान की वास्तविक स्थिति को समझने का एक विश्वसनीय और मानवीय स्रोत है।

संदर्भ सूची

(क) शोध लेख

1. शर्मा श. समकालीन हिंदी कहानी और ग्रामीण यथार्थ. हंस. 2018;63(4):45–58.
2. वर्मा सु. कृषक जीवन और नई सदी की हिंदी कहानी. इंद्रप्रस्थ भारती जर्नल. 2020;12(2):112–129.
3. मिश्रा राकृ. हिंदी साहित्य में किसान विमर्श. समकालीन चिंतन. 2019;8(1):76–89.
4. सिंह अ. 21वीं सदी में ग्रामीण परिवर्तन और कथा साहित्य. भारतीय साहित्य समीक्षा. 2021;19:205–223.
5. यादव अ. फसल संकट और हिंदी कथा साहित्य की संवेदना. गंगा-यमुना शोध पत्रिका. 2022;7(3):33–47.
6. कुमार श. पश्चिमी राजस्थान के जालौर एवं बाड़मेर जिलों के गांवों में शिक्षा और स्वास्थ्य के संस्थागत विकास का स्थानिक प्रतिरूप [Internet]. 2019 [cited 2026 Feb 12]. Available from: https://ssrn.com/abstract=3763157

(ख) प्राथमिक साहित्य (कहानी संग्रह / लेखक)

7. प्रेमचंद. मानसरोवर. खंड 1–8. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
8. प्रेमचंद. पूस की रात; कफन; सद्गति. विभिन्न संकलनों में प्रकाशित.
9. रेणु फना. ठेले पर हिमालय; लाल पान की बेदी. पटना: लोकभारत प्रकाशन.
10. नागार्जुन. बाबा बटेसरनाथ तथा चुनी हुई कहानियाँ. नई दिल्ली: प्रकाशक अज्ञात.
11. वर्मा नि. कहीं नहीं कहीं नहीं; जलती झाड़ियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
12. कुमार जै. रूपांतरण; जिंदगी के मोड़. नई दिल्ली: प्रकाशक अज्ञात.
13. शिवमूर्ति. काली बारात; तर्पण; नयी कहानी संग्रह. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
14. प्रकाश उ. पीली छतरी वाली लड़की; मोहल्ला अस्सी. नई दिल्ली: प्रकाशक अज्ञात.

© 2025 मोनू स्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

15. संजीव. फांस; पानी का वृत्तांत; अन्य कहानियाँ. नई दिल्ली: प्रकाशक अज्ञात.
16. कुमार अ. समकालीन हिंदी कहानी संग्रह (कृषक जीवन पर चयनित कहानियाँ). नई दिल्ली: प्रकाशक अज्ञात.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

CONFERENCE ORGANIZERS

- Desert Research Association (DRA), Headquarters – Jodhpur
- Nehru Study Centre, Jai Narain Vyas University, Jodhpur
- Government Girls College, Jhalamand (Jodhpur)
- Department of Geography, Dr. Bhim Rao Ambedkar Government College, Sri Ganganagar

In Collaboration with Kalinga University, Raipur (Chhattisgarh)

Disclaimer: The views, opinions, statements, and conclusions expressed in the papers, abstracts, presentations, and other scholarly contributions included in this conference are solely those of the respective authors. The organisers and publisher shall not be held responsible for any loss, harm, damage, or consequences — direct or indirect — arising from the use, application, or interpretation of any information, data, or findings published or presented in this conference. All responsibility for the originality, authenticity, ethical compliance, and correctness of the content lies entirely with the respective authors.

© 2025 मोनू स्वामी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/